॥ ॐ कालीकायै नमः ॥

अम्बे तू है जगदम्बे काली आरती

माँ काली आरती • पूरे बोल + सरल अर्थ • PDF 2026

VH Original · vhoriginal.com

अम्बे तू है जगदम्बे काली आरती नवरात्रि और काली पूजा की सबसे खोजी जाने वाली आरती है। नीचे पारंपरिक बोल हैं। अर्थ VH Original ने सरल हिंदी में लिखा है।

आरती कब गाएँ

संध्या आरती, अष्टमी-नवमी, या माँ काली के मंदिर में। थाली घुमाएँ, टेक दोहराएँ — ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती।

अम्बे तू है जगदम्बे काली, जय दुर्गे खप्पर वाली।
तेरे ही गुण गावें भारती, ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती॥

हे अम्बे, तुम जगदंबा काली हो, खप्पर वाली दुर्गा हो। भारत तुम्हारे गुण गाता है, हम सब आरती उतारते हैं।

तेरे भक्त जनों पर माता, भीर पड़ी है भारी।
दानव दल पर टूट पड़ो माँ, करके सिंह सवारी॥
सौ-सौ सिंहों से बलशाली, है अष्ट भुजाओं वाली।
दुखियों के दुखड़े निवारती॥

ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती॥

भक्तों पर विपत्ति भारी है। सिंह पर सवार होकर असुर-दल पर टूटो। आठ भुजाओं वाली माँ दुख हरती हैं।

माँ बेटे का है इस जग में, बड़ा ही निर्मल नाता।
पूत कपूत सुने हैं पर ना, माता सुनी कुमाता॥
सब पे करुणा बरसाने वाली, अमृत बरसाने वाली।
दुखियों के दुखड़े निवारती॥

ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती॥

माँ-बेटे का नाता पवित्र है। बेटा भटक सकता है, माँ कुमाता नहीं कही जाती। करुणा और अमृत बरसाने वाली दुख निवारती हैं।

नहीं मांगते धन और दौलत, न चाँदी न सोना माँ।
हम तो माँगे माँ तेरे मन में, इक छोटा सा कोना॥
सबकी बिगड़ी बनाने वाली, लाज बचाने वाली।
सतियों के सत को संवारती॥

ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती॥

धन-सोना नहीं, सिर्फ तुम्हारे मन में एक कोना माँगते हैं। बिगड़ी बनाती हो, लाज बचाती हो, सत्य संवारती हो।

चरण शरण में खड़े तुम्हारी, ले पूजा की थाली।
अपना हाथ सर पर रख दो माँ, संकट हरने वाली॥
माँ भर दो भक्ति रस प्याली, अष्ट भुजाओं वाली।
भक्तों के कारज तू ही सारती॥

ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती॥

चरणों में थाली लेकर खड़े हैं। हाथ सर पर रखो, भक्ति की प्याली भर दो, भक्त का काम संभालो।

अम्बे तू है जगदम्बे काली, जय दुर्गे खप्पर वाली।
तेरे ही गुण गावें भारती, ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती॥

॥ इति अम्बे तू है जगदम्बे काली आरती ॥

बोल लोक-प्रचलित पारंपरिक आरती पर आधारित हैं। रिकॉर्डेड गाने की कॉपी नहीं। क्षेत्रीय गायन में अष्ट/दस भुजा जैसे शब्द बदल सकते हैं।

यह आरती हिंदू पुराणों, लोक-परंपरा और घरों में प्रचलित पूजा-पाठ पर आधारित है। तिथि आपके पंचांग से बदल सकती है। यह आस्था का पाठ है — चिकित्सा, कानूनी सलाह या फल की गारंटी नहीं। वेबसाइट इसके उपयोग से होने वाले लाभ-हानि की जिम्मेदारी नहीं लेती।